मानवता की श्रेष्ठता को बयान करती कहानी ' सबसे कठिन काम '

डॉ.बालाजी श्रीपती भुरे
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवजागृति वरिष्ठ महाविद्यालय,
नलेगाँव ता. चाकुर जि. लातूर।

21वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में सामाजिक संवेदना को अपनी संवेदना मानकर लिखनेवाली कहानीकार मधु कांकरिया का जन्म 23 मार्च 1957 को कोलकाता के एक निम्न मध्यवर्गीय जैन व्यापारी परिवार में हुआ। आपने कोलकाता के महिला कॉलेज से अर्थशास्त्र में एम.ए. किया। बचपन से आपको पढ़ने का शौक था। अतः आपका साहित्य-लेखन की ओर झुकना स्वाभाविक ही था। परिणाम स्वरूप आपने कहानी, उपन्यास, यात्रा वृतांत, डायरी आदि विधाओं पर लेखनी चलाकर हिंदी साहित्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके योगदान को देखकर इन्हें मारवाड़ी समाज गौरव पुरस्कार, हेमचंद्र आचार्य साहित्य सम्मान, विजय वर्मा कथा सम्मान आदि विविध पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है।

' बीते हुए', 'भरी दोपहरी के अंधेरे' 'और अंत में ईशु' आदि मधु कांकरिया जी के चर्चित कहानी संग्रह हैं। 'सबसे कठिन काम' यह एक इनकी चर्चित कहानी है। आकर्षक कथावस्तु, पात्रों के संवाद, कहानी का आशय,शीर्षक की सार्थकता और कहानी की उद्देश्यपूर्णता, आज के संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता, कहानीकार की अभिव्यक्ति एवं लेखन शैली आदि ने कहानी को प्रभावपूर्ण एवं रोचक बनाया है। परिणाम स्वरूप पाठक अपने आप कहानी पठन में तल्लीन हो जाता है। इस कहानी को समझने के लिए हमें निम्नलिखित बिंदुओं पर चिंतन करना आवश्यक है। जैसे -

1) रोचक कथावस्तु :-

इस कहानी के केंद्र में डॉ.मधुसूदन नामक पात्र है, जिसके विचारों में आए परिवर्तन को यह कहानी प्रस्तुत करती है। संपूर्ण कहानी की कथावस्तु डॉ.मधुसूदन के इर्द-गिर्द घूमती है। कहानी में मधुसूदन का एक ईमानदार, कर्तव्य परायण, परिश्रमी और सेवाभावी वृत्तिवाले पात्र के रूप में चित्रण किया गया है। डॉक्टर होने के नाते वह पूरी निष्ठा के साथ अपने आसपास के या परिसर के लोगों की सेवा करता है, उनके स्वास्थ्य के लिए दिन-रात मेहनत करता है। लेकिन चुनाव में खड़े होने की लालसा के कारण उसके विचारों में परिवर्तन आता है। चुनाव में केवल 55 वोट उन्हें मिलते हैं और उनकी डिपॉजिट भी जप्त हो जाती है। उनके विरोध में खड़े हुए गुंडे चुनकर आ जाते हैं। इस 55 वोटवाले किस्से ने डॉक्टर के मन में लोगों के प्रति प्रतिशोध की भावना को जगाया, जिससे वह लोगों की मुफ्त सेवा बंद कर देता है। कहानी में इसी घटना को कथावस्तु के रूप में कहानीकार ने लिया है। कथावस्तु की रोचकता के कारण यह कहानी पाठक को आरंभ से लेकर अंत तक कहानी की धाराप्रवाह में बांधकर रखने में सक्षम है।

2) मूल संवेदना :-

डॉ.मधुसूदन की अपने पेशे के प्रति सत्यनिष्ठा को यह कहानी बयान करती है। डॉ.मधुसूदन को अपनी ईमानदारी, कर्तव्य परायणता और सेवाभावी वृत्ति के

कारण बाहर समाज में सम्मान तो मिलता है, लेकिन अपने घर में नहीं। यहाँ तक कि चुनाव का परिणाम लोगों के प्रति उसकी सेवाभावी वृत्ति को भी नष्ट कर देता है। एक ईमानदार और सेवाभावी वृत्तिवाला किस प्रकार लोगों के प्रति प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होता है, यही बताने का प्रयास इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ने किया है। यही कहानी की मूल संवेदना है।

3) प्रातिनिधिक पात्र :-

कहानी में प्रमुख पात्र डॉ. मधुससूदन ही है। साथ ही साथ एक छोटी बीमार बच्ची और लेखिका का कहानी में संकेत मिलता है। पात्रों की प्रातिनिधिकता की दृष्टि से इस कहानी को देखा जाए, तो कहानी में डॉ.मधुसूदन एक ओर ईमानदार, कर्तव्य परायण, परिश्रमी एवं सेवाभावी वृत्ति के व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, तो दूसरी ओर प्रतिशोध और घृणा से जीनेवाले व्यक्ति का भी प्रतिनिधित्व करता है। स्वयं लेखिका छोटी बीमार बच्ची के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करती हुई सामाजिक संवेदना को बनाए रखनेवाले मनुष्य का प्रतिनिधित्व करती है। कहानी में चित्रित पात्रों की प्रतिनिधिकता आज के आधुनिक संदर्भ में हमें यथार्थ लगती है, क्योंकि आज भी हमारे समाज में कई संख्या में डॉ.मधुसूदन जैसे कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार, सेवाभावी वृत्ति तथा मानवता को लेकर चलनेवाले पात्र हैं जिन्हें राजनीति ईमानदारी और मानवता तथा सेवाभाव की परिधि से बाहर कर रही है और यह भी सत्य है कि, कहीं-कहीं लेखिका के समान पीड़ितों के प्रति संवेदना दिखानेवाले पात्र भी हमें दिखाई देते हैं लेकिन इनकी संख्या बहुत अल्प सी है।

4) सेवाभावी वृत्ति :-

डॉ. मधुसूदन का बचपन से ही लोगों की सेवा करने का सपना था। इसलिए डॉक्टर बनते ही उन्होंने अपने सपनों के अनुसार सेवा करने का पूरा नक्शा तैयार किया। कहाँ हेल्थ क्लब खुलवाना है, कहाँ निशुल्क दवाइयों की व्यवस्था करनी है इसका नियोजन किया। उसी दृष्टि से वे गरीब बस्तियों के लिए मुफ्त दवाइयों की और मुफ्त ऑपरेशन की व्यवस्था करते हुए लोगों को गंदगी, मच्छरों-मक्खियों से बचने के लिए प्रबोधन भी करते रहते हैं। यहाँ तक कि उन्होंने खुद के लिए नियम भी बनाया था कि," सप्ताह में दो दिन निशुल्क देखेंगे। कुछ रोगियों से आधी फीस लेंगे और जो पूरी तरह समर्थ हैं सिर्फ उनसे ही पूरी फीस लेंगे। कितने भी थके-हारे क्यों न हो, हर जरूरी नाइट कॉल को अटेंड करेंगे। बिना चिकित्सा किसी को मरने नहीं देंगे।"1 इसी विचार से प्रेरित होकर वे समाज की सेवा करने में व्यस्त रहते हैं। समाज की सेवा में उन्हें अपने परिवार का भी ध्यान नहीं रहता। यहाँ तक कि शादी के पश्चात अपनी सुहागरात के समय किसी मरीज का फोन आते ही उनका अपनी पत्नी की इच्छा-आकांक्षाओं का विचार किए बिना यह कहना कि," डॉक्टर बनना बहुत कठिन होता है प्रिय, किसी की जान की कीमत पर मैं सुहागरात कैसे मना सकता हूँ ?"2 और बीमार पेशेंट को देखने के लिए चले जाना। यह लोगों के प्रति उनकी सेवाभावी वृत्ति को ही व्यक्त करता है।

5) मानसिक संघर्ष :-

किसी की इच्छा पूर्ति करना और किसी की इच्छा पूर्ति न करने के कारण उपेक्षा का पात्र बनना ये दो भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ मनुष्य में मानसिक संघर्ष उत्पन्न करती है। इस कहानी का पात्र डॉ.मधुसूदन पारिवारिक और सामाजिक दायित्व के बीच मानसिक संघर्ष को लेकर जीता है। डॉ.मधुसूदन समाज सेवा के लिए अपना इतना समय देते हैं कि अपनी इच्छा होते हुए भी वे अपनी पत्नी की सालगिरह पर या बच्चे के जन्मदिन पर भी समय नहीं दे पाते, न समय पर घर आ सकते हैं, न उनके लिए कोई उपहार दे सकते हैं। इसी कारण जहाँ उन्हें बाहर समाज में प्रतिष्ठा मिलती है, वहाँ घर के लोगों द्वारा उपेक्षा भी मिलने लगती है। परिवार और समाज इन दोनों के बीच मानसिक संघर्ष को लेकर उन्हें जीना पड़ता है।

6) **अति आत्मविश्वास :-**

मनुष्य को अपने कर्तव्य कर्म पर आत्मविश्वास तो करना चाहिए लेकिन अति आत्मविश्वास करना कभी-कभी हमारे कार्य में बाधा उत्पन्न कर देता है। कहानी का नायक डॉ. मधुसूदन के साथ भी यही हुआ। वह चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में खड़े हो जाते हैं। विपक्षी उम्मीदवार जो गुंडे होते हुए भी जोरों का प्रचार करते हैं, लेकिन डॉ. मधुसूदन अपने प्रचार को नजरअंदाज करते हुए बीमार लोगों की सेवा करने में लगे रहते हैं। उनके मित्रों द्वारा समझाने पर कि तुम्हें प्रचार तथा विज्ञापन की ओर ध्यान देना चाहिए तब वे मित्रों से कहते हैं कि," तीस साल क्या कम है मेरे विज्ञापन के लिए कौन सा घर है जहाँ मेरी सेवा नहीं पहुंची ? "3 वे प्रचार की ओर ध्यान न देकर बीमार लोगों की सेवा करने में लगे रहते हैं। यहाँ तक कि मतगणना के दिन । । । भी एक विरासत योगी की तरह वे रोगियों को देखने के लिए निकल जाते हैं। यह उनके अति आत्मविश्वास को व्यक्त करता है। इसका परिणाम यह होता है कि उन्हें चुनाव में केवल 55 वोट मिलते हैं। यहाँ तक कि उनकी जमानत भी जप्त हो जाती है। इस हार के लिए विपक्षी दल नहीं बल्कि उनका अति आत्मविश्वास जिम्मेदार रहा है।

7) **भ्रष्ट राजनीतिक परिवेश :-**

मधु कांकरिया ने इस कहानी में भ्रष्ट राजनीतिक परिवेश का भी संकेत दिया है। कहानी में अन्ना आंदोलन की पृष्ठभूमि से उपजी एक नई पार्टी ने देश के प्रतिबद्ध युवाओं को राजनीति में सक्रिय होने का आह्वान किया था। इसी आह्वान से प्रेरित होकर डॉ. मधुसूदन ने देश का भ्रष्टाचार मिटाने के लिए विधानसभा चुनाव लड़ने का निर्णय लिया। यह सुनते ही जैसे कि आज राजनीतिक पार्टियाँ करती हैं, ठीक वैसा ही टीएमसी और सीपीएम दोनों मुख्य दलों को डॉक्टर के चुनाव लड़ने की खबर मिलते ही," दोनों ने ऑफर किया कि वे उनकी पार्टी का प्रतिनिधित्व करें"4 लेकिन सत्य और इमानदारी के जुनून से वे स्वयं निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने का निर्णय लेते हैं। डॉक्टर साहब की समाज की इतनी सेवा और प्रसिद्धि के बाद भी उनके दोनों मुख्य प्रतिद्वंद्वी कुख्यात गुंडे होने के बावजूद चुनकर आ जाते हैं और मधुसूदन को केवल 55 वोट मिल जाते हैं, यहाँ तक कि उनकी डिपाजिट भी जप्त हो जाती है। यहाँ गुंडे नेताओं की विजय से भ्रष्ट राजनीति का हमें संकेत मिलता है।

8) **प्रतिशोध की भावना :-**

इस कहानी में एक ईमानदार, कर्तव्य परायण, परिश्रमी और सेवाभावी वृत्ति के डॉ.मधुसूदन को चुनाव में केवल पचपन वोट मिलने से तथा उनकी जमानत जप्त होने से उनकी ईमानदारी और सेवाभावी वृत्ति पर करारी चोट हुई थी। उससे डॉ. मधुसूदन आहत हो जाते हैं। उनके मन में लोगों के प्रति प्रतिशोध की भावना उत्पन्न होती है। इसका परिणाम यह होता है कि उनकी " जीरो फीस और आधी फीस की सुविधा अब खत्म थी। सबको समान भाव से देखते हुए चेंबर फीस अब उन्होंने दुगनी कर दी थी। होम विजिट चौगुनी थी।... शनिवार और रविवार की मुफ्त सेवाएँ भी उन्होंने बंद कर दी थी"5 यहाँ तक कि उनके व्यवहार में भी परिवर्तन आने लगा। रास्ते में जाते समय अगर उन्हें " कोई नमस्कार भी करता तो उसे घूरते और सोचते जिन पचपन लोगों ने वोट दिया उन्हें क्या उसमें होगा वह भी ?"6 यह प्रतिशोध की भावना उनमें आ जाती है और अपनी शर्मनाक हार से वे अपनी मुफ्त की सेवा बंद कर लोगों का बदला लेना चाहते हैं। यहाँ तक कि लेखिका के पड़ोस की चार वर्षीय लड़की को जब डायरिया हो जाता है, तब अपनी प्रतिशोध की भावना से वे उस लड़की के घर जांचने के लिए नहीं जाते। डॉ. मधुसूदन की यह प्रतिशोध की भावना इंसानियत छोड़ने के लिए उन्हें विवश कर देती है।

9) **मानवता पर बल :-**

मधु कांकरिया ने अपनी 'सबसे कठिन काम' इस कहानी के माध्यम से समाज को इंसान बनने का संदेश दिया है। डॉ. मधुसूदन ने चुनाव में हुई अपनी शर्मनाक

हार से अपनी इंसानियत को त्याग दिया था। चार वर्षीय लड़की को डायरिया से बचाने के लिए न आने के उनके निर्णय पर स्वयं लेखिका जब डॉक्टर के पास जाती है, तब प्रतिशोध की भावना से वे लेखिका को शहर के दूसरे डॉक्टर के पास जाने की सलाह देते हैं। लेकिन लेखिका डॉक्टर को लिए बिना न जाने की ठान लेती है, तब डॉक्टर के यह कहने पर कि,' कितना कठिन है डॉक्टर बनना' लेखिका का मन ही मन यह सोचना कि," कितना कठिन है इंसान बनना ! "7 यह मानवता की श्रेष्ठता और आज के समय में उसकी आवश्यकता पर बल देता है। यह कहानी समाज में मानवता की स्थापना की आवश्यकता को बयान करती है।

10) **शीर्षक की सार्थकता** :-

कहानीकार ने इस कहानी के शीर्षक के माध्यम से समाज को मानवता का संदेश दिया है। कहानी का शीर्षक अपने आप में सार्थक लगता है, क्योंकि आज की भागदौड़ के जीवन में प्रत्येक मनुष्य को अपना कार्य अन्य लोगों के कार्यों से कठिन लग रहा है। कहानीकार ने अपनी कहानी में यही बताया है कि एक पत्नी को अपने पति की समाज सेवा से अपनी हो रही उपेक्षा के कारण एक अच्छा पति बनना सबसे कठिन लगता है, तो डॉ. मधुसूदन को अपने सेवा के कारण तथा पचपन ओटवाले किस्से से उत्पन्न प्रतिशोध के कारण सबसे कठिन काम डॉक्टर बनना लगता है। लेकिन दोनों भी यह भूल जाते हैं कि सबसे कठिन काम तो इंसान बनना है। कहानी के अंत में कहानीकार का डॉक्टर के बारे में यह सोचना कि सबसे कठिन काम है इंसान बनना ! इस कहानी के शीर्षक को सार्थक बना देता है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार मधु कांकरिया ने 'सबसे कठिन काम' इस कहानी में डॉ.मधुसूदन के माध्यम से यह बताने की कोशिश की है कि, मनुष्य जो भी कर्म करता है, उसमें पूरी निष्ठा से एवं समाधानी रहकर नहीं करता। वह उससे भी अधिक पाने की अपेक्षा करते रहता है। कई बार उसे अपने कर्म पर अहंकार तथा अति विश्वास हो जाता है, जो उसकी सफलता में बाधा बन जाता है। इस कहानी से कुछ निष्कर्ष बिंदु हमारे सामने आते हैं। जैसे-

- सेवाभावी वृत्ति ही मनुष्य की सही पहचान है।
- अति आत्मविश्वास करना कभी कभी मनुष्य के कार्य में बाधा उत्पन्न कर देता है।
- आज भ्रष्ट राजनीति का बोलबाला है और उसमें गुंडों का प्रभाव बढ़ते जा रहा है।
- प्रतिशोध की भावना मनुष्य को इंसानियत छोड़ने के लिए विवश करती है, जो मानवता के लिए घातक है।
- कहानीकार ने इस कहानी के माध्यम से मानवता पर बल देते हुए मनुष्य तथा समाज के लिए ईमानदारी, सेवाभाव, कर्मनिष्ठा आदि गुणों का होना आवश्यक बताया।

कुलमिलाकर हम कह सकते हैं कि इस कहानी में डॉ.मधुसूदन अपने परिवार की तरफ या अपनी पत्नी और बेटों की तरफ भी ध्यान न देते हुए अपने आसपास के लोगों की निशुल्क सेवा करते हैं। वे चुनाव में खड़े होकर जीतकर लोगों की और भी अधिक सेवा कर राजकीय भ्रष्टाचार को खत्म करने की भावना से चुनाव लड़ते हैं। लेकिन भ्रष्ट राजनीति में उनकी ईमानदारी की हार हो जाती है। और उनमें लोगों के प्रति प्रतिशोध की भावना उत्पन्न हो जाती है। परिणाम स्वरुप उनकी इंसानियत नष्ट हो जाती है। अर्थात आज के समय में इंसान बनना सबसे कठिन काम बन गया है क्योंकि इमानदारी और इंसानियत के बीच कई बाधाएं आ रही है या लाई जा रही है यही इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने स्पष्ट किया है।

संदर्भ सूची :-

1) संपा.डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटील - कहानी संकलन - प्र.संस्करण 2019, दिव्या डिस्ट्रीब्यूटर्स,कानपुर - पृ.116
2) संपा.डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटील - कहानी संकलन - प्र.संस्करण 2019, दिव्या डिस्ट्रीब्यूटर्स,कानपुर - पृ.116
3) संपा.डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटील - कहानी संकलन - प्र.संस्करण 2019, दिव्या डिस्ट्रीब्यूटर्स,कानपुर - पृ.118
4) संपा.डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटील - कहानी संकलन - प्र.संस्करण 2019, दिव्या डिस्ट्रीब्यूटर्स,कानपुर - पृ.118
5) संपा.डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटील - कहानी संकलन - प्र.संस्करण 2019, दिव्या डिस्ट्रीब्यूटर्स,कानपुर - पृ.119
6) संपा.डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटील - कहानी संकलन - प्र.संस्करण 2019, दिव्या डिस्ट्रीब्यूटर्स,कानपुर - पृ.120
7) संपा.डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटील - कहानी संकलन - प्र.संस्करण 2019, दिव्या डिस्ट्रीब्यूटर्स,कानपुर - पृ.120